



भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं का योगदान

श्री लोकेश कुमार मीना

एम.ए. इतिहास (NET) राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर(राज.)

Article Info

Publication Issue :

November-December-2023

Volume 6, Issue 6

Page Number : 158-164

Article History

Received : 02 Dec 2023

Published : 21 Dec 2023

शोधसार:—प्रस्तुत शोध पत्र भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन के विभिन्न चरणों जैसे , 1857 की क्रांति , असहयोग आंदोलन , कांग्रेस संगठन, गांधी के अहिंसक आंदोलन, क्रांतिकारी आंदोलन तथा आजाद हिन्द फौज इत्यादि में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष अपनी भूमिका निर्वहन करने वाली महिलाओं के योगदान को रेखांकित एवं व्याख्यायित करने का प्रयास है । जिन महिलाओं ने आजादी की लड़ाई को अपने साहस, आत्मविश्वास, बलिदान और त्याग दिया उन महिलाओं के संघर्ष की गाथा उजागर करना आवश्यक है । यह शोध पत्र भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की अनाम नायिकाओं की अदृश्य भूमिकाओं जिन्होंने राष्ट्रवादी विचारधारा से स्वतंत्रता आन्दोलन में व्यक्तित्व की पहचान करने का प्रयास करता है ।

कूटशब्द(keywords):— रेखांकित, व्याख्यायित, पितृसत्तात्मक, विचारधारा, रूढ़िवादी, नवजागरण, प्रगतिशीलता, प्रतिमान, गतिविधियां, प्रेरित, उत्कृष्ट, सूत्रपात, परम्परागत।

प्रस्तावना (Introduction): पितृसत्तात्मक भेदभावपूर्ण नियम एवं धारणाएं , जो समाज में आज भी प्रचलित हैं महिलाओं की भूमिका , उनके अस्तित्व एवं उनकी पहचान तथा उनके महत्वपूर्ण योगदान को या तो अदृश्य रखते हैं या समाप्त कर देते हैं । लेकिन वास्तविकता यह है की महिलाएं प्रत्येक क्षेत्र में पुरुष की तरह ही महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर सकती है एवं करती है । महिलाएं कृषक के रूप में भी कार्य करती है परन्तु आज भी किसान भाइयों है तो सुनाई देता है लेकिन किसान बहनें ना सुनाई देती हैं ना दिखाई देती हैं यानी कृषक तो पुरुषों को ही माना जाता है । महिलाएं सड़क निर्माण में काम करती है मगर बोर्ड पर लिखा होता है ' Men at Work ' इसी तरह के बहुत सारे मुश्किल कार्यों में महिलाएं बराबर की भागीदार रहती है इसके बावजूद यह कहा जाता है कि महिलाएं खतरे के कार्य नहीं कर सकती है । विविध देशों के मुक्ति संग्राम में एवं सैन्य संघर्षों में भी महिलाओं की प्रत्यक्ष या परोक्ष महत्वपूर्ण भूमिका रही है लेकिन उनकी भूमिका का उचित रेखांकन नहीं होता है । वो घर के निर्माण में काम करती है , वो घर से बाहर जा कर भी काम करने लगी है , मगर अभी तक सार्थक पहचान से वंचित है । भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष में महत्वपूर्ण योगदान देने वाली बहुत सारी महिलाएं भी इस पहचान से वंचित रही है तथा अदृश्य रही हैं । वास्तव में स्वतंत्रता आन्दोलन के समय के रूढ़िवादी हिंदू समाज में इतने बड़े पैमाने पर महिलाओं का सड़कों पर आना एवं आंदोलनों में भाग लेना एक बेहद ही प्रगतिशील एवं अनूठी घटना थी । संपूर्ण विश्व के इतिहास में उस समय महिलाओं की ऐसी सक्रियता के उदाहरण बहुत कम मिलते हैं उस समय पश्चिमी

जगत में महिलाएं अपने मताधिकार एवं अन्य राजनीतिक आर्थिक अधिकारों के लिए संघर्ष कर रहीं थीं। पश्चिम के नारीवादी महिला संगठनों को इन स्वतंत्रताओं के लिए लंबा संघर्ष करना पड़ा जिसमें वह पुरुष के समान अधिकार प्राप्त कर सकें। लेकिन भारत के स्वतंत्रता संघर्ष में महिलाओं को स्वतः ही ऐसे अधिकार मिल गए जिसमें वह पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ी हुईं एवं देश की आजादी के संघर्ष में अपना योगदान दिया। गाँधीजी ने कहा था कि हमारी माँओं – बहनों के सहयोग के बिना यह संघर्ष संभव ही नहीं था।

भारत को परतंत्रता से गुलामी की जंजीरों से मुक्ति के संघर्ष में महिलाओं की सहभागिता तथा महिलाओं की स्वयं की मुक्ति के लिए संघर्ष यह दोनों घटनाएं साथ – साथ हो रही थीं लेकिन यहां एक बार ध्यान देने योग्य है कि भारत में महिला मुक्ति का आंदोलन पश्चिम के महिला आंदोलन की अवधारणा से भिन्न था। स्वतंत्रता संघर्ष में अपनी सक्रिय भागीदारी से महिलाओं ने समाज में पहचान एवं विश्वास अर्जित किया। स्वतंत्रता संघर्ष में महिलाओं की अभूतपूर्व योगदान एवं उनकी सहभागिता ने महिलाओं के बारे में प्रचलित परंपरागत धारणा में परिवर्तन किया तथा उन्हें परंपरागत रूढ़ियों और मान्यताओं से मुक्त करने में भी सहायता प्रदान की।

सन् 1857 का स्वतंत्रता संग्राम, भारतीय स्वतंत्रता के लिए किया गया पहला ऐसा संघर्ष था, जिसकी नायक एक महिला थी जिसने अद्भुत वीरता, पराक्रम और साहस का परिचय दिया। रामगढ़ की रानी ने जहाँ रणक्षेत्र में लड़ते – लड़ते प्राण दे दिये वहीं बेगम हजरत महल अंग्रेजों के समक्ष आत्म समर्पण कर अपमानित होने के बजाए नेपाल चली गई, जहाँ वनवास में उनकी मृत्यु हुई और जीनत महल को बर्मा में निर्वासित कैदी के रूप में जीवन व्यतीत करना पड़ा। 1857 की क्रांति में रानी लक्ष्मीबाई, बेगम हजरत महल, बेगम जीनत महल के अतिरिक्त अवतिका बाई लोधी, ईश्वर कुमारी, तुकलाई सुल्तान जमानी बेगम, नर्तकी अजीजन, कुमारी मैना, महारानी तपस्विनी इत्यादि वीरांगनाओं का योगदान उल्लेखनीय था। इस प्रथम मुक्ति संग्राम में देश के विभिन्न भागों से अनेकों महिलाओं ने भाग लिया था किंतु दुर्भाग्य से आज हम उनमें से कुछ को छोड़कर अन्य के नाम तक नहीं जानते हैं।

1857 की क्रांति के बाद हिंदुस्तान की धरती पर हो रहे परिवर्तनों ने जहाँ एक ओर नवजागरण की जमीन तैयार की, वहीं विभिन्न सुधार आंदोलनों और आधुनिक मूल्यों की रोशनी में रूढ़िवादी मूल्य टूट रहे थे, हिंदू समाज के बंधन ढीले पड़ रहे थे और स्त्रियों की दुनिया घर से बाहर नए आकाश में विस्तार पा रही थी। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की 1885 में स्थापना ने महिलाओं को एक राजनीतिक मंच प्रदान किया। इसकी स्थापना के कुछ वर्षों बाद कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशनों में भारतीय महिलाएं प्रतिनिधि के रूप में भाग लेने के लिए आने लगीं। 1890 के कलकत्ता अधिवेशन में महिला उपन्यासकार स्वर्ण कुमारी देवी और ब्रिटिश साम्राज्य की पहली महिला स्नातक श्रीमती कादम्बिनी गांगुली ने भाग लिया। श्रीमती गांगुली प्रथम महिला थीं जिन्होंने राष्ट्रीय कांग्रेस के मंच से अपना पहला भाषण दिया। यह सम्भवतः भारतीय महिलाओं के राष्ट्रीय आन्दोलन में प्रवेश का शुभारम्भ था और इसके बाद तो मातृभूमि की खातिर राजनैतिक गतिविधियों में भाग लेने वाली महिलाओं की संख्या लगातार बढ़ती ही चली गयी। कांग्रेस के प्रारंभिक सत्रों में महिलाएं प्रतिनिधियों के रूप में शामिल तो हुईं किंतु उनमें अधिकांश महिलाएं स्वयंसेवकों के रूप में उपस्थित थे और कुछ ही महिलाएं विचार विमर्श में सहभागिता करती थी तथा ऊँचे पदों पर तो नाममात्र की ही महिलाएं पहुंच पाईं। 1890 में रमाबाई पडिता और स्वर्ण कुमारी देवी के प्रयत्नों से लगभग 100 महिलाओं ने कलकत्ता अधिवेशन में भाग लिया। श्रीमती ज्योतिर्मयी गांगुली ने 1900 में प्रथम बार कांग्रेस मंच से वदे मातरम का गायन किया तथा उनके नेतृत्व में लड़कियों का एक सेवादल भी कांग्रेस अधिवेशन की व्यवस्था संभालने पहुंचा था। बाद के दिनों में महिलाओं की संख्या में वृद्धि हुई तथा उन्होंने महत्वपूर्ण पद भी संभाले। डॉ. एनी बेसेंट 1917 में कांग्रेस की प्रथम महिला अध्यक्ष बनी, इसके बाद 1925 में सरोजिनी नायडू और 1933 में नलिनी

सेनगुप्ता ने कांग्रेस की अध्यक्षता की। उस समय के हिसाब से यह एक बड़ी प्रगतिशील घटना थी कि देश की आजादी के लिए लड़ने वाले सबसे बड़े संगठन की अध्यक्षता एक महिला करें।

भारत में 19 वीं सदी के उत्तरार्ध में जब समाज सुधार और परिवर्तनों का क्रम प्रारंभ परिवर्तनों ने महिलाओं की जीवन में भी बदलाव किए। संपूर्ण देश में समाज सुधारकों के प्रयासों से प्रगतिशील कानून जैसे सती निषेध अधिनियम, विधवा पुनर्विवाह अधिनियम, विवाह की निर्धारित आयु से संबंधित अधिनियम पारित हुए साथ ही महिलाओं के लिए समान अधिकारों की मांग भी प्रारंभ हुई। महिलाओं के लिए उठने वाली कुछ साहसी आवाजों ने स्थापित प्रतिमानों को चुनौती प्रस्तुत की। महिलाओं की स्थिति में सुधार, समानता, महिला शिक्षा एवं महिला अधिकारों की रक्षा के प्रयास किए जाने लगे। राजा राममोहन राय, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, दुर्गा राम जी मेहता, बैहराम मालाबारी, डी के कारवे, एमजी रानाडे, ज्योतिबा राव फुले, गोपाल गणेश आगरकर इत्यादि ने समानता के दृष्टिकोण से महिला प्रगतिशीलता एवं महिलाओं की स्थिति में सुधार के लिए प्रयास किए।

नवजागरण काल में भारतीय स्त्रियों का नेतृत्व एवं सहभागिता का कार्य सामाजिक, राजनीतिक एवं धार्मिक सभी स्तरों पर साथ साथ चल रहे थे। महिलाओं की स्थिति में परिवर्तन में जहां एक ओर स्त्री संस्थाओं एवं महिला पत्रिकाओं की शैक्षणिक भूमिका रही वहीं दूसरी ओर महिला नेत्रियों की राजनीति, समाज सुधार शिक्षा आदि क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भूमिका रही। एनी पडिता रमाबाई, भगिनी निवेदिता, पडिता क्षमा देवी, सीता देवी, फ्रांसिना सोराबजी, अवतिकाबाई गोखले, यशोदाबाई अगरकर, सत्यभामा तिलक, सावित्रीबाई फुले, शांता तिलक, मुथुलक्ष्मी रेड्डी, लेडी सदाशिव अय्यर, श्रीमती चंद्रशेखर अय्यर, माधवी अय्यर, बेगम शाहनवाज, स्वर्ण कुमारी देवी, चारु लता मुखर्जी, सरला देवी चौधरी, हीराबाई टाटा, जानकीबाई भट्ट, रानी चिमन भाई गायकवाड, बेगम हसरत मोहानी, रानी लक्ष्मीबाई राजवाड़े, श्रीमती मानिक लाल प्रेमचंद, मार्गरेट कजिंस, लेडी अब्दुल कादिर, सरोजिनी नायडू,। बेसेंट इत्यादि महिलाएं न केवल समाज सुधार कार्य कर रहे थे बल्कि शैक्षणिक जागृति लाने में भी सक्रिय थी इनमें से अनेक महिलाएं सामाजिक एवं राजनीतिक दोनों ही क्षेत्रों में सक्रिय थी। ये महिलाएं जहां एक ओर अपने अधिकारों के लिए दृढ़ता से संघर्ष कर रही थी वहीं वे अत्यंत उत्साह एवं वचनबद्धता से स्वतंत्रता संग्राम में भी भाग ले रही थी। स्वतंत्रता संघर्ष में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी ने महिलाओं में विश्वास एवं समाज में उनकी पहचान को स्थापित किया।

गांधी युग में राष्ट्रीय आन्दोलन जन आंदोलन में परिवर्तित हो गया। इस युग में सभी धर्मों व सम्प्रदायों के अनुयायियों तथा जनता के प्रत्येक वर्ग ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। इस कार्य में महिलाएं भी पीछे नहीं रही। गांधी जी की प्रेरणा से स्वतंत्रता संघर्ष में महिलाओं ने अधिकाधिक सहभागिता प्रदर्शित की गांधीजी ने परंपरागत प्रतीकों एवं आदर्श को महिलाओं के लिए प्रेरणा और ऊर्जा के स्रोतों में बदल दिया अब महिलाएं अपने घरों से निकलकर मीटिंग और जुलूस आयोजित कर रही थीं, खादी बेच रही थीं और स्वदेशी के संदेश को फैला रही थी। वे शराब और विदेशी कपड़ों की दुकानों पर धरना दे रही थी साथ ही साथ स्वाधीनता आंदोलन के लिए आर्थिक सहयोग प्रदान करने के लिए अपने आभूषणों एवं अन्य बहुमूल्य चीजों को भी दे रहीं थीं। देशी रियासतों से भी महिलाएं आजादी के इस संघर्ष में सक्रियता दिखा रहीं थीं। भारत के प्रत्येक क्षेत्र उत्तर दक्षिण पूर्व पश्चिम से अनेक महिलाओं जैसे हंसा मेहता, अवतिकाबाई गोखले, प्रेम भाई कंटक, पार्वती देवी, लाडो रानी जोशी एवं उनकी तीनों पुत्रियों मन मोहिनी, श्यामा और जानकी, सत्यवती देवी, एस अंबुजा, रुकमणी, दुर्गाबाई, लक्ष्मीपति, बसंती देवी, उर्मिला देवी, सरला देवी, और मालती चौधरी, मणि वेन वल्लभभाई पटेल, नली सेनगुप्ता, शामदेवी, बसंती देवी, पार्वती देवी सुभद्रा कुमारी चौहान इत्यादि ने नेतृत्व का कार्य भी कुशलतापूर्वक निर्वहन किया।

गांधीजी राष्ट्रीय आन्दोलन में महिलाओं की भागीदारी के पूर्ण पक्षधर थे । इन महिलाओं को उत्साहित कर एवं उन्हें संगठित कर एक लक्ष्य महात्मा गांधी ने 1920 में असहयोग आन्दोलन चलाकर दिया । इससे महिलाओं को न केवल एक उद्देश्य मिला अपितु उन्हें एक नयी दिशा भी मिली । शिक्षित और उदार परिवारों की महिलाओं के साथ - साथ ग्रामीण क्षेत्रों के लोग भी महात्मा गांधी के साथ उनके असहयोग आंदोलन में सक्रिय रूप से शामिल हुए । राजकुमारी अमृत कौर , सुचेता कृपलानी , सरला देवी चौधुरानी , मुथुलक्ष्मी रेड्डी , सुशीला नायर और अरुणा आसफ अली , मीरा बेन कुछ महिला स्वतंत्रता सेनानी हैं जिन्होंने अहिंसक आंदोलन में भाग लिया । कस्तूरबा गांधी और कमला नेहरू ने भी राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लिया । लाडो रानी जुत्शी और उनकी बेटियों ने लाहौर में आंदोलन का नेतृत्व किया । राष्ट्रीय आंदोलन में शामिल होने वाली भारतीय महिलाएं जीवन के सभी क्षेत्रों , सभी जातियों , धर्मों और समुदायों से थीं । आजादी के इस स्वतंत्रता संघर्ष में महिलाओं ने न केवल सहभागिता की अपितु बहुत सारी महिलाएं राष्ट्रवादी गतिविधियों के सुचारू संचालन में भी सहयोग कर रही थीं । महिलाओं ने ब्रिटिश कानून के तहत अपराधी घोषित किए गए स्वतंत्रता सेनानियों को आश्रय देने , उनको छुपाने , उनको सुरक्षित बाहर निकालने , बच्चों की मन में आजादी एवं राष्ट्रीय चेतना के विचारों को भरने तथा परिवार के पुरुष सदस्यों को आजादी की लड़ाई में योगदान के लिए प्रेरित करने संबंधी सभी कार्य किये ।

1930 में गांधी जी की दांडी यात्रा में महिलाओं को साथ में नहीं ले जाने के उनके निर्णय ने महिलाओं को निराश किया । महिलाओं और उनके कई संगठनों ने इस निर्णय का इस आधार पर प्रतिरोध किया कि एक अहिंसक संघर्ष में लिंग के आधार पर भेदभाव अप्राकृतिक था और यह महिलाओं की निष्ठा एवं कुशलता पर प्रश्नचिन्ह लगाने का कार्य करेगा । महिलाओं की निष्ठा एवं उत्साह को देखते हुए अंततः गांधी जी ने नमक सत्याग्रह में महिलाओं की संपूर्ण भागीदारी करने की अनुमति दी । गांधीजी ने अब्बास तैयब जी के बाद सरोजिनी नायडू को अपना दूसरा उत्तराधिकारी माना और अपने मिशन को एक विशेष तरीके से पूरा किया । गांधीजी के सविनय अवज्ञा आन्दोलन में महिलाओं की भागीदारी , बीसवीं सदी के प्रारंभिक वर्षों की तुलना में बहुत ज्यादा थी । एक बड़ी संख्या में महिलाओं ने सत्याग्रह में भाग लेकर अपनी शक्ति का परिचय दिया । महिलाओं ने प्रत्येक घर को कानून तोड़ने वालों के अभयारण्य में परिवर्तित कर दिया ।

अपनी भावनात्मक शुद्धता के द्वारा उन्होंने अपने कार्यों के लिए एक स्वीकार्यता प्राप्त कर ली । स्वदेशी प्रचार के पक्ष में वातावरण बनाने के लिये विदेशी वस्त्रों की होली जलाई जाने लगी । शराब की दुकाने धरना देकर बंद कराई जाने लगी । महिलाओं ने ब्रिटिश सरकार के दमन का सामना किया , गालियां सुनी , लाठीचार्ज का सामना किया और बंदी भी बनाई गई । 1930 में भारतीय महिलाओं के इन महान कार्यों के लिए कांग्रेस कार्यसमिति ने एक प्रस्ताव पारित करके उन्हें महान श्रद्धांजलि प्रदान की । 1930 के बाद राजनीति में महिलाओं के प्रवेश का प्रश्न अब वादविवाद का विषय नहीं था एवं इस विषय पर महिला और पुरुष के बीच कोई विरोध भी उत्पन्न नहीं हुआ । जिस मताधिकार एवं राजनीतिक अधिकारों के लिए पश्चिमी देशों में महिलाओं को मुक्ति आंदोलन एवं कठिन संघर्ष करने पड़े वहीं भारतीय महिलाओं की अटूट निष्ठा एवं समर्पण तथा आजादी के संघर्ष में उनकी आहुति ने इस कार्य को सहर्ष आसान कर दिया था ।

1940 में गांधी के व्यक्तिगत सत्याग्रह में भी महिलाएं पीछे नहीं रही । सुचेता कृपलानी इस व्यक्तिगत सत्याग्रह कार्यक्रम में शामिल होने वाली पहली व्यक्ति थीं । श्रीदेवी मुसद्दी , प्रभा दीक्षित , शांति आचार्य राजकुमारी अमृत कौर खुर्शीद नौरोजी इत्यादि महिलाओं ने विभिन्न प्रकार से अपनी सक्रियता का परिचय दिया । स्वतंत्रता संघर्ष के रचनात्मक कार्यों में विशेष रूप से महिलाओं की और भी अधिक महत्वपूर्ण भूमिका रही । ब्रिटिश शासकों के खिलाफ विदेशी सामानों का बहिष्कार करने और बंगाल के क्षेत्र में उत्पादित केवल उन्हीं सामानों को खरीदने का संकल्प लेकर महिलाएं पुरुषों के साथ

जुड़ गईं। महिलाओं ने परंपरागत भारतीय सामाजिक मान्यताओं की परवाह न करते हुए आयातित कांच से निर्मित चूड़ियां तोड़ी एवं अपने आयातित कपड़े भी जलाकर विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करने के आन्दोलन को पूरा किया।

1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में तो हजारों की संख्या में महिलायें घरों से बाहर निकल आईं। उन्होंने तन - मन से इस आन्दोलन में सहयोग दिया। इस बार महिलाओं की गतिविधियां जुलूस और प्रदर्शनों और धरना तक ही सीमित नहीं थी बल्कि उनके लिए जगह - जगह प्रशिक्षण कैंप भी खुल गए थे जहां महिलाओं और लड़कियों को घायलों की सेवा सुश्रुषा के लिए प्राथमिक चिकित्सा, होम नर्सिंग प्रशिक्षण देने के साथ - साथ उन्हें अपनी आत्मरक्षा के लिए लाठी चलाने गुप्त कार्यवाही और का संचालन करने तथा भूमिगत रहकर आंदोलन में भाग लेने का प्रशिक्षण भी दिया जाता था। इस आंदोलन में अनेक महिलाएं जेल गईं तथा कभी तो जेल में उनके साथ उनके छोटे बच्चे भी गए। उन्होंने संगठित रूप से कर्तव्य के प्रति समर्पित होकर और अनेक यातनाओं को सरकार ने सीखचों में जकड़कर रखा था। इनमें मिदनापुर जिले की विद्युत वाहिनी सैना की महिलाएं, मातंगिनी हुए उस समय राजनीतिक गतिविधियों की बागडोर सम्भाली जब अधिकांश राष्ट्रीय नेताओं को ब्रिटिश हजरा, कनक लता, तारा रानी श्रीवास्तव, उषा मेहता, मेनका देवी, डॉक्टर सुशीला नैयर, अम्मू स्वामीनाथन, श्रीमती सरोजिनी नायडू, अरूणा आसिफ अली, श्रीमती सुचेता कृपलानी, कमला देवी चटोपाध्याय, कस्तूरबा गांधी, विजय लक्ष्मी पंडित, मुत्तुलक्ष्मी रेड्डी, एनी बेसेंट, हन्सा मेहता तथा राजकुमारी अमृता कौर जैसी अनेक सहते महिलाओं के योगदान को इतिहास कभी विस्मृत नहीं कर पायेगा।

गांधी जी के नेतृत्व में असहयोग आंदोलन से लेकर भारत की स्वाधीनता तक महिलाओं का राष्ट्रीय आंदोलन में जो योगदान था, वह भारतीय परिवेश में उनकी जागरूकता एवं परिवर्तनों को दर्शाता है। महिलाओं में सदियों से चली आ रही रूढ़िवादिता, अंधविश्वास तथा सामाजिक पिछड़ेपन की स्थिति को गांधीजी के दर्शन ने बदल दिया था। उनकी भीरुता का स्थान साहस ने ले लिया, उनके अंधविश्वास तथा रूढ़िवादिता के स्थान पर जागरूकता दिखाई देने लगी एवं उनमें राजनीति परिपक्वता का बोध होने लगा। कुल मिलाकर भारतीय महिलाओं के उत्थान का यह स्वर्णिम काल था।

राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लेकर महिलाओं ने न केवल ब्रिटिश शासन के विरुद्ध तीव्र प्रतिक्रिया व्यक्त की बल्कि गिरफ्तारियां भी दीं। कुल मिलाकर महिलाओं के अंदर इस समय जो राष्ट्रचेतना उत्पन्न हुई थी उसने यह सिद्ध कर दिया कि वे एक ऐसी राष्ट्रीय शक्ति हैं जो राष्ट्र की स्वाधीनता और अधिकारों के लिए सभी बंधनों से उन्मुक्त होकर लड़ सकती हैं। इस समय जिन स्त्रियों ने इतिहास में अपना नाम दर्ज कराया था उनमें एक पंक्ति उनकी भी थी जो गांधी जी के अहिंसावादी नीति का अनुसरण कर रही थीं और दूसरी पंक्ति उनकी थी जिन्होंने क्रांति का मार्ग चुना था।

स्वतंत्रता संघर्ष के आरंभ से लेकर अंत तक महिलाओं ने न केवल शक्तिपूर्ण आन्दोलनों में सक्रिय भाग लिया अपितु वे क्रांतिकारी गतिविधियों में भी सक्रिय रहीं। यद्यपि गांधीजी के अहिंसक संघर्ष के मार्ग को चुनने वाली महिलाओं की संख्या अधिक थी परंतु बहुत सारी ऐसी महिलाएं भी थी जो क्रांतिकारियों के रूप में कार्य कर रहीं थीं।

बंगाल और भारत के अन्य हिस्सों से विभिन्न सशस्त्र क्रांतियों में महिलाएं प्रत्यक्ष या परोक्ष महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही थीं। बहुत सारी महिलाओं ने क्रांतिकारी गतिविधियों में पूरा सहयोग दिया। इन क्रांतिकारी महिलाओं में मैडम भीकाजी कामा, भगिनी निवेदिता, सरला देवी चौधरी, नैनी बाला देवी, कुमारी प्रीति लता वाडेकर, कल्पना दत्त, वीना दास, सुहासिनी गांगुली, शांति घोष, सुनीति चौधरी, उज्ज्वला मजूमदार, चारुशिला देवी, बेला मित्र, दुर्गा भाभी, मृदालिनी देवी, लज्जावती, शत्रो देवी इत्यादि महत्वपूर्ण नाम हैं जबकि अनेकों महिलाओं के नाम भी अज्ञात हैं। इन महिलाओं की गतिविधियों में सरकारी दफ्तरों पर छापा, हथियारों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुंचाना, सदेशों को पहुंचाना, फरार क्रांतिकारियों को शरण देना, बम बनाना और ब्रिटिश अधिकारियों को भयभीत करना भी शामिल था। मैडम भीकाजी कामा

ने अभिनव भारत सोसायटी में काम किया तथा उन्होंने इंटरनेशनल सोशलिस्ट कांग्रेस में भारत का प्रतिनिधित्व किया । उन्होंने भारतीय झंडे को फहराया और स्वराज के लिए कार्य करती रही । ये क्रांतिकारी महिलाएं दल के लिए धन एकत्रित करती थी , क्रांति से संबन्धित सामग्री बाँटती थी , घर पर आए क्रांतिकारियों का सत्कार , सेवा एवम आश्रय प्रदान करने का कार्य करती थी । इन महिलाओं में दर्गा भाभी का नाम भी बहुत महत्वपूर्ण है ।

भगत सिंह और काकोरी ट्रेन षडयंत्र मामले में महिलाओं ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई । महिला राष्ट्रीय संघ की स्थापना लतिका घोष ने वर्ष 1928 में की थी । वीणा दास जिन्होंने बंगाल के राज्यपाल पर गोली चलाई थी . और कमला दास गुप्ता और कल्याणी दास सभी संबंधित क्रांतिकारी समूहों के भीतर सक्रिय थे । महिलाओं ने साहसपूर्वक भारतीय स्वतंत्रता के हिंसक और अहिंसक आंदोलनों में भाग लिया । भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं ने वक्ताओं , मार्चर्स , प्रचारकों और अथक स्वयंसेवकों के रूप में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है । उन्होंने भारतीय राजनीतिक दलों द्वारा आयोजित जुलूसों और रैलियों में सक्रिय रूप से भाग लिया । वे हमेशा हिंदू - मुस्लिम एकता के लिए लड़े । भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं का योगदान वास्तव में उल्लेखनीय हैं।

आजाद हिंद फौज , जो सुभाष चंद्र बोस द्वारा स्थापित की गई थी , इस महान देशभक्त के सक्षम और उल्लेखनीय नेतृत्व में भारतीय पुरुषों और महिलाओं द्वारा किए गए सबसे वास्तविक और निडर आंदोलनों में से एक था । 9 जुलाई 1943 को सुभाष चंद्र बोस एक विशाल जनसभा में महिलाओं को भी आजादी की लड़ाई में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया और उनकी प्रेरणा ने महिलाओं को संगठित किया । नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने इतिहास में पहली बार महिलाओं का सैन्य दल स्थापित किया । उन्होंने विभिन्न दक्षिण पूर्व एशियाई देशों से झांसी रानी रेजिमेंट के लिए लगभग 1000 महिलाओं की भर्ती की । डॉ . लक्ष्मी स्वामीनाथन , जो पेशे से एक चिकित्सा व्यवसायी थीं , ने इस रेजिमेंट का नेतृत्व किया । कैप्टन भारती सहाय , मलाया की श्रीमती गुरदयाल कौर , सरीना रमण जैसी अनेकों अज्ञात युवा महिलाएं इस रानी झांसी में रेजिमेंट में शामिल थीं । इस महिला रेजीमेंट के सिंगापुर , मलाया और बर्मा के अनेक भागों में कैंप लगे एवं इन कैंपों में महिलाओं को चिकित्सा , नर्सिंग , ड्रिल , नक्शे देखना , सामान्य युद्ध तकनीक , शस्त्र चालन , राइफल एवं मशीन गन चलाना आदि सेना के सभी क्षेत्रों में प्रशिक्षण दिया गया । यह सभी महिलाएं सैन्य वेश में कई मील तक मार्च करती थी तथा दैनिक परेड में भारत की आजादी के लिए शपथ लेती थीं । प्रशिक्षण के बाद यह रानी झांसी रेजीमेंट पूरी तरह लड़ने के लिए तैयार थी । रेजिमेंट में महिलाओं को उनके पुरुष समकक्षों की तरह ही प्रशिक्षण दिया गया था । यहां तक कि उनकी वर्दी भी पुरुष सैनिकों के समान थी । नेताजी की मृत्यु के बाद आईएनए का वास्तविक प्रभाव भले ही सैन्य दृष्टि से नहीं रहा हो , लेकिन भारत की महिलाओं पर इसका गहरा मनोवैज्ञानिक प्रभाव था । लड़ने के लिए पूरी तरह तैयार एवं प्रशिक्षित इन महिलाओं ने थोड़े समय में ही अपना जो रिकॉर्ड बनाया वह न केवल भारतीय महिलाओं अपितु वैश्विक स्तर पर भी अकित करने योग्य है क्योंकि उस समय महिलाओं की सेना या सैन्य बलों में महिलाओं की उपस्थिति एक क्रांतिकारी घटना थी ।

यदि हम वर्तमान समय में ऐसा कोई भी क्षेत्र शेष नहीं है , जहाँ महिलाओं ने अपनी उपस्थिति दर्ज न की हो । वर्तमान समय में बड़ी संख्या में महिलाएं शिक्षक , इंजीनियर , डॉक्टर और वैज्ञानिक बनकर उच्च पदों पर पहुंची और रोजगार के विविध क्षेत्रों में सक्रिय हुई है । महिलाओं ने आइटी , प्रशासन , शिक्षा और विज्ञान जैसे अनेक क्षेत्रों में अपनी भागीदारी बढ़ाकर पहचान बनाई है।

राष्ट्रीय आन्दोलन के इतिहास में अपने आप को महिलाओं ने विविध आयामों के साथ प्रस्तुत किया है । भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में पुरुषों और महिलाओं ने समान रूप से भाग लिया । भारतीय महिलाओं का योगदान इसमें इसलिए भी महत्वपूर्ण हो जाता है कि उनका सामाजिक उत्थान हुए ज्यादा समय नहीं हुआ घर हो या राजनीति का क्षेत्र , महिलाओं ने

जिस साहस , सहिष्णुता और वीरता से स्वतंत्रता आंदोलन में अपनी भूमिका निभाई , वह इतिहास की धरोहर और वर्तमान की प्रेरणा है । महिलाओं ने देश के स्वतंत्रता समर की प्रत्येक रणनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है । स्त्रियों के द्वारा अपने लिए मताधिकार की मांग को लेकर लड़ना हो या देश को स्वतंत्र कराने में अपना सर्वस्व न्यौछावर करने की बात हो , स्त्रियों ने सभी क्षेत्रों में पूरी तत्परता के साथ काम किया । असंख्य महिलाओं की स्वतंत्रता आंदोलन में सहभागिता ने न केवल देश के लिए साथ ही साथ महिलाओं के लिए भी नए युग का सूत्रपात किया इसीलिए स्वतंत्र भारत के संविधान में महिलाओं को सभी क्षेत्रों में समानता का अधिकार प्रदान किया गया है । भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में महिलाओं की भागीदारी यह स्पष्ट करती थी कि महिला पुरुषों से कहीं भी पिछे नहीं है।

सन्दर्भसूची

1. Indian National Movement role of women - Dr K S prakash
2. विपिन चन्द्र , भारत का स्वतन्त्रता संघर्ष .
3. नीरा देसाई एवं उषा ठक्कर , भारतीय समाज में महिलाएं , राष्ट्रीय पुस्तक न्यास भारत 2017
4. विश्व प्रकाश गुप्ता , मोहिनी गुप्त , स्वतंत्रता संग्राम और महिलाएं
5. डॉ . एस . एल . नागोरी , कान्ता नागोरी , भारतीय वीरांगनाएं
6. आशारानी व्होरा महिलाएं और स्वराज्य , प्रकाशन विभाग , भारत सरकार , 1999
7. विजय एग्गू वीमने इन इण्डियन पालिटिक्स
8. Women's History Month : Pandita Ramabai . Women's History Network
9. Ramabai Sarasvati (Pandita) : Pandita Ramabai (2003) .
10. आधुनिक भारत का इतिहास- डॉ एम के मीना